E Content for students of Patliputra University

B.A(Hons),Part 2, Paper 4

Subject--Philosophy

Title/Heading of Topic-"जॉन लॉक का द्रव्य विचार"

---डॉ. राज नारायण सिंह सहायक प्राध्यापक, दर्शनशात्र विभाग, राम रतन सिंह महाविद्यालय मोकामा, पाटलिपुत्र विश्वविद्यालय

लॉक के अनुसार गुणों के आश्रय या आधार का नाम ही द्रव्य है। उनका कहना है कि हम गुणों का प्रत्यक्ष ज्ञान प्राप्त करते हैं तथा हम यह भी जानते हैं कि गुण निराधार नहीं रह सकते। अत: गुणों के आधार का नाम ही द्रव्य है। परन्तु द्रव्य की सत्ता गुणों के समान प्रत्यक्ष नहीं। उसकी सत्ता अनुमेय है, अर्थात् अनुमान के आधार पर हम कहते हैं कि द्रव्य की सत्ता है। उदाहरणार्थ रंग, वजन, कठोरता आदि गुणों के आधार पर हम काँच (शीशे) को द्रव्य मान लेते हैं। परन्तु यहाँ यह प्रश्न है कि द्रव्य अपने आप में क्या है, अर्थात् उसका अपना स्वरूप क्या है? लॉक का कहना है कि द्रव्य अज्ञेय (Unknowable) है, अर्थात् द्रव्य के अपने स्वरूप के सम्बन्ध में हम कुछ भी नहीं जानते (I know not what)| तात्पर्य यह है कि हम गुणों का प्रत्यक्ष करते हैं तथा इनके आश्रय का एक आज्ञात नाम (द्रव्य) प्रदान कर देते हैं क्योंकि हम यह जानते हैं कि गुण निराधार नहीं रह सकते या निराश्रय नहीं हो सकते, अतः इनका आश्रय या आधार द्रव्य ही होगा। परन्तु यह एक कल्पनामात्र है या संज्ञा मात्र है जिसके स्पष्ट धर्म की हमें उपलब्धि नहीं होती। उपलब्धि हमें गुणों की ही होती है तथा गुणों के सन्निधान का कारण हम द्रव्य मान लेते हैं। यहाँ स्पष्ट रूप से लॉक बाह्यानुमेयवादी(Representationist) प्रतीत होते हैं,क्योंकि उसके अनुसार बाह्य वस्तु (द्रव्य) अनुमेय हैं, प्रत्यक्षगम्य नहीं विश्व में अनेक द्रव्य है, परन्तु सभी संज्ञामात्र हैं तथा

सरल प्रत्ययों के योग है। हम कुछ गुणों को देखते हैं तथा उनके आधार को एक संज्ञा प्रदान कर देते हैं। दूसरा सुनने वाला व्यक्ति इन संज्ञाओं को सुनकर सरल प्रत्ययों की धारणा बना लेता है। उदाहरणार्थ, मनुष्य, अश्व, सूर्य आदि सभी संज्ञा किसी वस्तु की सूचक हैं| हम कुछ गुणों को देखकर 'मनुष्य' संज्ञा प्रदान कर देते हैं। वस्तुत: गुणों का आधार अज्ञात है।यहाँ यह ध्यान देने की बात है कि लॉक बाह्य पदार्थ का निषेध नहीं करते वरन् अनुमेय मानते हैं। हम किसी बाह्य वस्तु को आम कहते हैं। यह आम केवल कुछ गुणों का संघातमात्र है। गुणों का प्रत्यक्ष हमें होता है , अतः उनके आधार की कल्पना सत् है । अतः बाह्य वस्तु का वे निराकरण नहीं करते । इसीलिए लॉक को बाह्य - प्रत्यक्षवादी (Presentationist) नहीं माना गया है, क्योंकि उनके अनुसार बाह्य वस्तु का हमें प्रत्यक्ष नहीं होता, प्रत्यक्ष तो गुणों का होता है। इस प्रकार लॉक के अनुसार द्रव्य विचार सरल नहीं, जटिल प्रत्यय (Complex idea) है जो सरल प्रत्ययों का योग है। उदाहरणार्थ, स्वर्ण एक द्रव्य है जो रूप, रंग, वजन आदि अनेक सरल प्रत्ययों का योग है।

लॉक के अनुसार द्रव्य में प्रत्यय (Complex idea) है। इस मिश्र प्रत्यय की उत्पत्ति तीन सरल प्रत्ययों के योग से होती है-

१. मूलगुण (Primary quality)
२. उपगुण (Secondary quality)
३. निष्क्रिय तथा सक्रिय शक्ति (Active and passive power)

हम किसी भौतिक वस्तु को द्रव्य मान लेते है, क्योंकि उसमें ये तीन प्रत्यय पाये जाते हैं। इसी प्रकार हम आध्यात्मिक द्रव्यों को भी मान लेते हैं।

द्रव्य के प्रकार

लॉक के अनुसार द्रव्य तीन प्रकार के हैं

१. भौतिक (जड़ द्रव्य)

२. आध्यात्मिक (आत्मा)

३. ईश्वर

हम पहले विचार कर आये है कि आकार, विस्तार, घनत्व, स्थिति,गति,संख्या आदि जड़ द्रव्यों के गुण है। इन गुणों का स्पष्टतः संवेदन होता है, अतः इनके आधार पर जड़ द्रव्य या शरीर की सत्ता सिद्ध है। यदि गुणों की अनुभूति होती है तो इनका आधार भी अवश्य ही होना चाहिए। इसी प्रकार हम अपने मन का सोचना, समझना, इच्छा करना इत्यादि गुणों के रूप में स्पष्ट अनुभव करते हैं, अर्थात् इन गुणों का हमें स्वसंवेदन प्राप्त होता है। इससे सिद्ध है कि इन गुणों का आधार आध्यात्मिक द्रव्य या आत्मा अवश्य है। जिस प्रकार शरीर-द्रव्य का गुण विस्तार है, उसी प्रकार आत्मा द्रव्य का गुण विचार है। विचार और विस्तार का हमें स्पष्ट अनुभव होता है। अतः इनके आधार भी अवश्य है। परन्तु जड़ और चेतन के निजी स्वरूप का हमें पता नहीं, हम केवल गुणों को जानते हैं। इसी प्रकार लॉक ईश्वर की भी सत्ता सिद्ध करते हैं। ईश्वर परम पुरुष (Supreme being) है वह मानवीय ज्ञान, अनन्त सुख आदि से सम्पन्न परम पुरुष है।

----------(०)----------